Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 01, January-June, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

हिंदी फ़िल्मी गीतों में शास्त्रीय विधाएँ

AMIT YADAV

Research Scholar, Faculty of Music and Fine Arts, Dehli Uiversity, Delhi

SUPERVISOR: PROF. ALKA NAGPAL

H.O.D., Faculty of Music and Fine Arts, Dehli Uiversity, Delhi

सारांश

फ़िल्म संगीत में ख्याल शैली का प्रयोग एक रोमांचक क्षेत्र है, जिसमें शास्त्रीय संगीत के तत्वों को फ़िल्म की घटनाओं का अनुकरण करते हुए रचनाओं को बनाया जाता है। इसका मुख्य लक्ष्य होता है कि यह संगीत फ़िल्म के कथानक में सहयोग और रसाभिव्यक्ति में मदद करता हैं। ख्याल गायन का फ़िल्मी संगीत में प्रयोग इसके लिए उचित होता है क्योंकि इसमें स्वर-सौंदर्य और शब्द-सौंदर्य का संतुलन बना रहता है। फ़िल्म संगीत में शास्त्रीय शैली के गायन अथवा वादन में विभिन्न राग, ताल और लय के प्रयोग किए जाते हैं, जिसमें गायक ताल के साथ विविध तरीकों से रचना का निर्माण करता है और इसे अभिनय के साथ प्रस्तुत करता है। ध्रुपद, ख्याल, तराना आदि विधाओं का प्रयोग फ़िल्मी गीतों में हुआ है, यह शास्त्रीय संगीत की प्रमुख विधा है जिसमें गायक गीत को विस्तृत और आधारभूत ढंग से प्रस्तुत करता है। ध्रुपद में धीमी लय और विस्तारशील तानों का उपयोग होता है जिससे गायन की गहराई और सांस्कृतिक महत्त्व प्रकट होता है। ख्याल एवं तराना गायन की एक विशेष प्रवृत्ति है और फ़िल्मी संगीत में इसका व्यापक प्रयोग हुआ है। फ़िल्मी गीतों के अंतर्गत ख्याल का प्रयोग अधिक देखने को मिलता है। इस शोध-पत्र में शंकर-जयकिशन, नौशाद, वसंत देशाई, मन्ना डे, रोशन आदि जैसे महान फ़िल्म संगीत निर्देशकों ने फ़िल्मी गीतों में शास्त्रीय संगीत को लेकर अपना किस प्रकार महत्वपूर्ण योगदान दिया है और इनमें किन कलाकारों ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है एवं इनके द्वारा प्रस्तुत गीत किन रागों में निबद्ध है।।

महत्वपूर्ण शब्द - फ़िल्मी संगीत, राग, शास्त्रीय फ़िल्में, संगीत निर्देशक, ख़्याल, वाद्य

शास्त्रीय संगीत का तात्पर्य है मर्यादित एवं नियमों से बाधित संगीत जो निश्चित परम्परा के साथ प्रस्तुत किया जाता है। फ़िल्मी गीतों में ख्याल शैली का प्रयोग भी संगीतकारों ने किया और फ़िल्मी गीतों में शास्त्रीय गायन हेतु शास्त्रीय संगीत के अनेक दिग्गज कलाकारों ने अपूर्व योगदान दिया। ख्याल का दबदबा, जिस प्रकार शास्त्रीय संगीत में अधिक है उसी प्रकार फ़िल्मी गीतों में इसका दबदबा अन्य शास्त्रीय विधाओं की तुलना में अधिक रहा है परन्तु फ़िल्मी गीतों के ख्यालों की कुछ अपनी विशेषताएँ हैं जो शास्त्रीय ख्याल गायकी से उन्हें अलग करती हैं। फ़िल्मी गीतों में प्राय: विलम्बित ख्याल की अपेक्षा छोटे ख़्याल ही अधिकतर प्रयोग किए गए हैं क्योंकि फ़िल्मों में लगभग 3 से 6 मिनट के अंदर ही गायक तथा वादक को सम्पूर्ण रसाभिव्यक्ति करनी होती है। फ़िल्मों में प्रयोग किए गए ख्यालों की एक विशेषता यह भी है कि इनमें स्वर- सौन्दर्य के साथ-साथ शब्द-सौन्दर्य का भी उतना ही ध्यान रखा जाता है यानि गीत रचना के शब्द समझ में आने आवश्यक हैं जबकि शास्त्रीय संगीत के गायक, शब्दों की अपेक्षा स्वरों को अधिक महत्त्व देते हैं। अतः इन गीत रचनाओं में शब्द और स्वर दोनों का महत्त्व बराबर होता है। ख्याल के अतिरिक्त ध्रुपद, त्रिवट, तराना आदि विधाओं का भी प्रयोग किया गया है परन्तु सबसे अधिक ख्याल गायन का ही प्रयोग किया गया। यहाँ कुछ शास्त्रीय विधाओं के उदाहरण प्रस्तुत हैं :-

फ़िल्म एवं उनके संगीत निर्देशक

फ़िल्म 'बसन्त बहार' में संगीतकार शंकर-जयकिशन ने कभी न भूलने वाला संगीत दिया है। इसी फ़िल्म में शास्त्रीय संगीत के दिग्गज गायक कलाकार पण्डित भीमसेन जोशी ने अपनी मधुर आवाज में इस गीत को पिरोया है।[1] राग बसन्त बहार पर आधारित द्रुत एकताल में निबद्ध रचना (जो ख़्याल शैली में है) 'केतकी गुलाब जूही चम्पक बन फूले' को पार्श्व गायक मन्ना डे के साथ युगल-बन्दी कर अत्यन्त सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया एवं फ़िल्म जगत का मान बढ़ाया।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 01, January-June, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

संगीतकार नौशाद अली ने 'बैजू बावरा' और 'शबाब' नामक चित्रपटों को संगीत देकर फ़िल्मी उद्योग में अपने आप को संगीतज्ञ के रूप में प्रतिष्ठित कर चुके हैं। 'फ़िल्म 'बैजू बावरा' में तानसेन की भूमिका के लिए पार्श्व गायन, उस्ताद अमीर खाँ ने किया और बैजू बावरा की भूमिका के लिए पण्डित डी०वी० पलुस्कर ने गायन किया। इस फ़िल्म में उस्ताद अमीर खाँ की चार प्रस्तुतियाँ हैं : शीर्षक गीत, राग पूरिया धनाश्री में निबद्ध द्रुत एक ताल की बन्दिश 'तोरी जय जय करतार', राग दरबारी में सरगम, राग देसी में विलम्बित एक ताल में निबद्ध रचना 'तुम्हरे गुण गाऊँ' और द्रुत तीन ताल में निबद्ध रचना 'आज गावत मन मेरो झुम के' पण्डित डी०वी० पलुस्कर के साथ युगल बन्दी में गाई तथा राग मेघ में तीन ताल में निबद्ध रचना-'घनन घनन घन गरजो रे'।[2] पार्श्व गायक मोहम्मद रफ़ी ने राग मालकोंश पर आधारित, तीन ताल में बद्ध एक भजन रचना जो ख्याल शैली में है - 'मन तड़पत हरि दर्शन को आज' बहुत सुन्दर ढंग से गाई।

'बैजू बावरा' के मधुर और मनभावन संगीत निर्देशन के पश्चात् फ़िल्म 'शबाब' के लिए संगीतकार नौशाद अली ने अमीर खाँ साहब को आमन्त्रित किया। इस फ़िल्म में अमीर खाँ साहब ने राग मुलतानी की, तीन ताल में निबद्ध रचना 'दया करो हे गिरधर गोपाल' गाई।[3] इस फ़िल्म में शास्त्रीय संगीत के महान कलाकारों ने योगदान दिया है।

उस्ताद अमीर ख़ाँ गायक के रूप में और पण्डित सामता प्रसाद ने वादक के रूप में तबले की संगत की, और पण्डित गोपाल मिश्र ने सारंगी पर साथ दिया, जब ऐसे महान कलाकार एक साथ शास्त्रीय संगीत का मंच प्रदर्शक करेगें तो भला कोई न कोई क्रान्ति तो होगी ही और ऊपर से शास्त्रीय संगीत के मर्मज्ञ संगीतकार नौशाद अली ने अपनी कला के जौहर दिखाए। फिर संगीतकार वसन्त देसाई ने शास्त्रीय संगीत पर आधारित फ़िल्म 'झनक झनक पायल बाजे' में संगीत निर्देशन किया और उस्ताद अमीर खाँ साहब द्वारा 'झनक झनक पायल बाजे' राग अड़ाना पर आधारित द्रुत तीन ताल में निबद्ध रचना गवाई जिसमें ख़ाँ साहब की तान शैली की सभी विशेषताएँ संक्षेप में प्रतिष्ठापित कर ली हैं मानों ऐसा लगता है जैसे फ़िल्म को जैसे जीवन दान दे दिया हो।

शंकर-जयकिशन फ़िल्म 'सीमा' के संगीत निर्देशक हैं। इस फ़िल्म की रचना- 'मन मोहना बड़े झूठे' जो राग जयजयवन्ती पर आधारित है और द्रुत एक ताल में निबद्ध है जिसे स्वर सम्राज्ञी लता मंगेशकर ने गाया है। इस गीत में राग की शुद्धता का विशेष ध्यान रखकर संगीतकारों की इस जोड़ी ने अपनी विद्वता का परिचय दिया है। एस०एन० त्रिपाठी जी फ़िल्म 'संगीत सम्राट तानसेन' के संगीत निर्देशक हैं जिन्होंने इस फ़िल्म में शास्त्रीय संगीत का प्रयोग करके नया कीर्तिमान स्थापित किया है। इस फ़िल्म का एक गीत छोटे ख्याल में 'सुध बिसर गई आज' जो सम्भवत: बिलावल थाट के अप्रचलित राग पार्वती पर आधारित और झपताल में निबद्ध है जिसे स्वर सम्राट मोहम्मद रफ़ी और मन्ना डे ने सुन्दरता से निभाया है और इस गीत के अन्त में कुछ तिहाईदार स्वर- तानों का दुगुण में सौंदर्य के साथ प्रयोग किया गया है। इस फ़िल्म के एक गीत में ध्रुपद रचना का भी प्रयोग किया गया है। राग यमन पर आधारित गीत 'सप्त सुरन तीन ग्राम' ध्रुपद रचना को पार्श्व गायन के शास्त्रीय संगीत के विशेषज्ञ गायक मन्ना डे ने खूबसूरती से गाया है। फ़िल्मी गीतों में त्रिवट विधा का भी प्रयोग थोड़ा बहुत हुआ है। फ़िल्म कोहिनूर में एक गीत राग हमीर पर आधारित, तीन ताल में बद्ध रचना 'मधुबन में राधिका नाचे रे' जिसमें मृदंग के बोल, तराने के बोल और तान सहित गायन किया गया है।[4] इस गीत एवं इसमें तानों की मधुर आवाज मोहम्मद रफ़ी ने दी हैं।

ख्याल गायन के सुप्रसिद्ध घरानों से तैयार हुए संगीतकार अपने-अपने घरानेदार संगीत का ही प्रयोग करते थे। इस समय के कलाकारों में स्वर, लय, ताल व रागों की पूर्ण जानकारी और अभिजात संगीत की प्रतिभा होती थी। उस समय के प्रसिद्ध संगीतज्ञ उस्ताद अल्लादिया खाँ, पण्डित विष्णु दिगम्बर पलुस्कर, बझेबुवा, अमान अली खाँ, अब्दुल करीम ख़ाँ आदि से सीखे हुए व्यक्तित्व थे। इसके पश्चात् मास्टर माधोलाल, जद्दन बाई, अनिल बिस्वास, बसन्त देसाई, जयदेव ये उच्चकोटि के संगीत निर्देशक हुए हैं। इनके पश्चात् नौशाद अली, सी० रामचन्द्र (चित्तलकर), हुस्नलाल भगतराम, एस०डी० बर्मन तथा शंकर-जयकिशन आदि

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 01, January-June, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

संगीतकार, इस क्षेत्र में विशेष रूप से चमकते रहे। सन् 1950 के लगभग रोशन, मदन मोहन, हेमन्त कुमार, सलील चौधरी और इनके पश्चात् रवि आदि संगीतकार आए।[5]

फ़िल्म 'मेरे हुजूर' के संगीत निर्देशक हैं शंकर-जयकिशन। इस फ़िल्म में राग दरबारी पर आधारित एक सुन्दर श्रृंगारिक, छोटे ख्याल की बन्दिश 'झनक झनक तोरी बाजे पायलिया' जो कि तीन ताल में निबद्ध बहुत सुन्दर रचना है जिसे गाया है मन्ना डे ने यह बन्दिश मन्ना डे ने बहुत अच्छे ढंग से गाई और काफ़ी प्रसिद्ध हुई फ़िल्म 'बरसात' में संगीतकार रोशन ने संगीत निर्देशन किया।[6] इस फ़िल्म का एक गीत, पण्डित भातखण्डे जी द्वारा कृत 'क्रमिक पुस्तक मालिका' में एक परम्परागत बन्दिश 'गरजत बरसत सावन आयो रे' का प्रयोग इसमें किया गया हैं। इस गीत की मधुर आवाज सुमन कल्याणपुर और कमल बारोत ने दी है और राग गौड़ मल्हार की यह बन्दिश तीन ताल में निबद्ध है। वैसे फ़िल्मी गीतों में शास्त्रीय संगीत की अनेक बन्दिशों का प्रयोग हुआ है परन्तु यहाँ उन्हीं का वर्णन किया है जो अधिक प्रसिद्ध हुई हैं।

फ़िल्मी गीत एवं राग

यहाँ पर कुछ प्रसिद्ध फ़िल्मों एवं उनके गीतों के नाम प्रस्तुत हैं जो शास्त्रीय संगीत पर आधारित हैं :-

बैजू बावरा (1952)

गीत के बोल -	राग
तोरी जय जय करतार -	धनाश्री
तुम्हरे गुण गाऊँ -	देशी
घनन घनन घन गरजो रे -	मेघ मल्हार
ओ दुनिया के रखवाले -	दरबारी
मोहे भूल गए सांवरिया -	भैरव
इन्सान बनो -	गुर्जरी तोड़ी
तू गंगा की मौज -	भैरवी

झनक झनक पायल बाजे (1955)

गीत के बोल -	राग
झनक झनक पायल बाजे -	अडाना
नैन सों नैन नाहि मिलावो -	बागेश्री
जो तुम तोड़ो पिया -	भैरवी
सैयां जावो -	देस
मेरे ए दिल बता -	भैरवी
कैसी ये मोहब्बत की सजा -	मिश्र खमाज
सुनो सुनो मुरली मनोहर -	खमाज

बसन्त बहार (1956)

गीत के बोल	राग

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 01, January-June, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

सुर ना सजे क्या गाऊँ मैं -	बसन्त बहार
मैं पिया तेरी -	भैरवी
कर गयो रे कर गयो रे -	मिश्र पीलू
जा जा रे जा बालमवा -	बागेश्री
बड़ी देर भई -	पीलू
भय भन्जना -	मधमाद सारंग

स्वर्ण सुन्दरी (1958)

गीत के बोल -	राग
कुहू कुहू बोले कोयलिया -	सोहनी
जा रे नटखट पिया -	मालकौंस
शम्भो सुन लो मेरी पुकार -	चन्द्रकौस
गिरिजा संग है -	भीमपलासी

गूँज उठी शहनाई (1959)

गीत के बोल	राग
तेरे सुर और मेरे गीत -	बिहाग
हौले हौले घूंघट पट खोले -	बिलावल
दिल का खिलौना हाय -	भैरवी
जीवन में पिया तेरा -	भैरवी
तेरी शहनाई बोले -	शिवरंजनी
कह दो कोई ना करे -	जोगिया

मुग़ल-ए-आजम (1960)

गीत के बोल	राग
प्रेम जोगन बनके -	सोहनी
मोहे पनघट पे नन्दलाल -	पीलू
प्यार किया तो डरना क्या -	भीमपलासी
ये दिल की लगी -	पीलू
तेरी महफ़िल में -	दरबारी
मुहब्बत की झूठी -	दरबारी
बेकस पे करम कीजिये -	केदार
शुभ दिन आयो राज दुलारे -	रागेश्वरी

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 01, January-June, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

ख़ुदा निगेहबां हो न तुम्हारा - यमन कल्याण

संगीत सम्राट तानसेन (1962)

गीत के बोल -	राग
बदली बदली दुनिया -	झिंझोटी
हे नटराज -	भैरव
झूमती चली हवा -	सोहनी
सुध बिसर गई -	भंखार
सखी कैसे धरूं मैं धीर -	खमाज
मितवा लौट आए री -	दरबारी
सप्तसुरन तीन ग्राम -	यमन कल्याण
प्रथम शान्त रस जांके -	भैरव, हिंडौल, दीपक, मेघ, मालकौंस, भैरवी

मेरी सूरत तेरी आँखें (1963)

गीत के बोल	राग
पूछे ना कैसे मैंने रैन बिताई -	अहीर-भैरव

गाईड (1966)

गीत के बोल -	राग
पिया तोसे नैना लागे रे -	तिलंग, मिश्र खमाज और छायानट

ममता (1966)

गीत के बोल -	राग
विकल मोरा मनवा उन बिन हाय -	बहार, पीलू और जोगिया

दस्तक (1970)

गीत के बोल -	राग
बैयां न धरो बलमा -	दरबारी

आलाप (1977)

गीत के बोल	राग
चाँद अकेला -	खमाज
काहे मनवा नाचे -	तिलंग
जिन्दगी को संवारना होगा -	अहीर भैरव
आई ऋतु सावन की -	मिश्र देस
नई री लगन -	विहाग

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 01, January-June, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

माता सरस्वती शारद - भैरवी

सुरसंगम (1985)

गीत के बोल -	राग
जाऊँ तोरे चरण कमल पर वारी -	भूपाली
आये सुर के पंछी आये -	मालकौंस
मैका पिया बुलावे -	कलावती
प्रभु मोरे अवगुण चित्त न धरो -	तोड़ी
हे शिव शंकर हे करुणाकर -	मारवा

लेकिन (1990)

गीत के बोल -	राग
यारा सीली सीली -	मधुमाद सारंग
सुनियो जी एक अरज -	देशकार
केसरिया बालम -	मिश्र माण्ड
झूठे नैना बोले -	बिलासखानी तोड़ी
मैं एक सदी से -	झिंझोटी, सारंग, मल्हार

फ़िल्मों में शास्त्रीय संगीत का खुलकर और सुन्दर प्रयोग हुआ है जिससे इसका, इतना महत्त्वपूर्ण स्थान बन गया कि फ़िल्मी शास्त्रीय संगीत की एक अलग शाखा बनाई जा सकती है। फ़िल्मी संगीत एक सुन्दर और वैचित्र्यपूर्ण विधा है जिसका फ़लक बहुत विस्तृत है। शास्त्रीय संगीत पर आधारित अनगिनत रचनाएँ, यह अपने में संजोए हुए हैं।

सन् 1922-30 तक नाटकों का, राष्ट्रीय स्तर पर बोलबाला था। भारत के विख्यात हारमोनियम वादक, शास्त्रीय संगीत के मर्मज्ञ गोविन्दराव टेंबे, एक अच्छे नाटककार भी थे। इन्होंने नाट्य संगीत में ठुमरी, कजरी, क़व्वाली आदि कई शैलियों का अच्छा खुलकर प्रयोग किया। इनके अतिरिक्त भास्कर बुवा बखले, हीराबाई बड़ौदेकर, पण्डित विनायक राव पटवर्धन इत्यादि कई संगीतज्ञों ने नाटकों में, संगीत निर्देशन करके नाट्य संगीत तथा शास्त्रीय संगीत के सम्बंध को अधिकाधिक सुदृढ़ बनाया।[7]

फ़िल्मी जगत् में शास्त्रीय संगीत प्रधान फ़िल्मों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। निरन्तर इतने चित्रपटों में शास्त्रीय संगीत का प्रयोग करने से इसकी उपयोगिता बढ़ती गई क्योंकि शास्त्रीय संगीत का अनेक प्रकार से समायोजन करके, इसे अलग-अलग ढंग से सजाया गया है। प्रारम्भ से लेकर आज तक सुलझे हुए संगीत निर्देशकों ने इस संगीत की गरिमा को बनाए रखा है चित्रपटों से यदि शास्त्रीय संगीत को निकाल दिया जाए तो शायद ही उसमें कोई नयापन या टिकाऊपन रह पाए। जैसा आजकल के संगीत की आयु मुश्किल से एक सप्ताह होती है और वो भी केवल स्थाई की पंक्तियाँ टेलीविजन पर देखी सुनी जाती हैं अन्तरा तो न जाने कहाँ गया ? अस्तु चित्रपटों में - शास्त्रीय संगीत का प्रयोग हितकर है बशर्ते कि उसका प्रस्तुतीकरण उचित प्रकार से किया जाए। ऐसा करने से शास्त्रीय संगीत, जनता के और निकट आ सकेगा।

इस संगीत निर्देशकों ने लोगों की रुचि को ध्यान में रखते हुए ऐसे गीतों का सृजन किया, जिनका आधार पूर्णतः शास्त्रीय संगीत था। इन गीतों में नवीनता भरने के लिए 'बैंक ग्राउंड म्यूजिक का सहारा लिया गया जिसमें ढोलक, घड़ा, हारमोनियम, मंजीरा जैसे

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 01, January-June, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

प्रचलित वाद्यों के साथ 'हवाईनगिटार' का भी प्रयोग किया गया। बैंक ग्राउंड म्यूतिक' के मेल से इन गीतों में एक नया परिवर्तन आया जो जनता को बहुत भाया। शनैः-शनैः फिल्मी गीतों के साथ और नये-नये विदेशी वाद्यों को भी सम्मिलित करके बहुत आकर्षक और प्रभावी 'बैंक ग्राउंड म्यूजिक दिया जाने लगा जिसके कारण इस संगीत का नवीन रूप उभरकर सामने आने लगा।[8]

आज तक चित्रपटों में शास्त्रीय संगीत को इतना महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ है। कि इसे चित्रपटीय शास्त्रीय संगीत की संज्ञा प्रदान की गई है क्योंकि प्रायः जितने भी शास्त्रीय संगीत की प्रधान फिल्में बनी उन्हें खूब सराहना मिली और उन चित्रपटों को राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कृत भी किया गया। फिल्मों के अस्तित्व को आधार प्रदान करने में तथा उसे बनाए रखने में शास्त्रीय संगीत की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। प्रारम्भ से लेकर आज तक शास्त्रीय संगीत की उपयोगिता रही है। फिल्में और शास्त्रीय संगीत, दोनों का अटूट सम्बन्ध है। यदि आज के संगीतकार मेहनत और लगन से हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत को आधार मानकर, चित्रपटों में संगीत निर्देशन करें तो फ़िल्मी गीतों का प्रकाश कभी धूमिल नहीं होगा। इस बात का प्रमाण है कि 50-60 वर्ष पुराने गीत आज भी तरोताजा हैं, क्योंकि जिस आधार पर ये गीत बने हैं यानि शास्त्रीय संगीत पर उसमें कस्तूरी जैसी महक है जो कभी समाप्त नहीं होगी।

निष्कर्ष

शास्त्रीय संगीत फिल्मी गीतों को एक गहराई और संगीतिकता प्रदान करता है जो उन्हें अन्य शैलियों से अलग करती है। यह शास्त्रीय संगीत के विभिन्न तत्वों को सम्मिलित करता है, जैसे कि राग, ताल, स्वर और लय, जो एक गीत को अद्वितीय बनाते हैं। प्रतिभाशाली संगीत निर्देशकों ने खूब जौहर दिखाए और उनकी मेहनत रंग लाई। क्योंकि उनके द्वारा संगीतबद्ध किए ख्याल-तराने आज भी जीवित हैं। फ़िल्मी संगीत एक सुन्दर और वैचित्र्यपूर्ण विधा है जिसका फ़लक बहुत विस्तृत है। शास्त्रीय संगीत पर आधारित अनगिनत रचनाएँ, यह अपने में संजोए हुए हैं जिसके कारण शास्त्रीय संगीत और सांगीतिक फ़िल्म, ये एक-दूसरे के पूरक बन गए हैं। एक के बिना दूसरा अधूरा है। इसमें अतिशयोक्ति नहीं है कि शास्त्रीय संगीत का स्थान फ़िल्मों में सर्वोपरि है और हमेशा रहेगा। फ़िल्मों में शास्त्रीय संगीत के महत्त्व को भी सभी मानते है। यदि फ़िल्मों को याद किया जाता है तो अच्छे गीत-संगीत के कारण ही किया जाता हैं।

सन्दर्भ

1. रेडियो प्लेबैक इण्डिया, स्वरगोष्ठी अंक 192, रविवार, 16 नवंबर 2014
2. जौहरी, सीमा, फ़िल्म संगीत निर्देशक रोशन व उनके समकालीन संगीतकार, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2002, पृ. 6
3. श्रुति जर्नल, जून अंक, संस्करण 2011, चेन्नई
4. डॉ. विमल, हिन्दी चित्रपट एवं संगीत का इतिहास, संजय प्रकाशन, दिल्ली, 2010, पृ. 154
5. लक्ष्मीनारायण गर्ग, हमारा 'फ़िल्म संगीत', मई, 1977 (संगीत अंक), पृ० 44
6. डॉ. विमल, हिन्दी चित्रपट एवं संगीत का इतिहास, संजय प्रकाशन, दिल्ली, 2010, पृ. 154
7. उमा गर्ग, संगीत में सौन्दर्य बोध (फ़िल्म संगीत के सन्दर्भ में), पृ० 166
8. राजस्थान पत्रिका, जयपुर, 18 सितम्बर, 1994, पृ० 19